

MP Board Class 10th Social Science Solutions Chapter 2 भारत के संसाधन II

सही विकल्प चुनकर लिखिए

प्रश्न 1.

भारत में सर्वाधिक रबर का उत्पादन होता है

- (i) केरल में
- (ii) तमिलनाडु में
- (iii) असम में
- (iv) कर्नाटक में।

उत्तर:

- (i) केरल में

प्रश्न 2.

नीली क्रान्ति का सम्बन्ध है (2009)

- (i) फलोत्पादन से
- (ii) मछली उत्पादन से
- (iii) भेड़ पालन से
- (iv) दुग्ध उत्पादन से।

उत्तर:

- (ii) मछली उत्पादन से

प्रश्न 3.

लौह अयस्क का प्रकार नहीं है

- (i) हेमेटाइट
- (ii) मैग्नेटाइट
- (iii) सिडेराइट
- (iv) बॉक्साइट।

उत्तर:

- (iv)

प्रश्न 4.

मध्य प्रदेश किस खनिज के उत्पादन में भारत में प्रथम स्थान रखता है ? (2014, 18)

- (i) लोहा
- (ii) अभ्रक
- (iii) सोना
- (iv) हीरा।

उत्तर:

- (iv) हीरा।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. पीत क्रान्ति का सम्बन्ध से है।
2. श्वेत क्रान्ति द्वारा भारत में को बढ़ावा मिला है। (2009, 13)
3. प्रति हेक्टेयर गेहूँ का सर्वाधिक उत्पादन करने वाला राज्य है।
4. सोयाबीन उत्पादन में प्रथम स्थान प्राप्त भारतीय राज्य है। (2010, 15)

उत्तर:

1. खाद्य तेलों और तिलहन फसलों
2. दुग्ध उत्पादन
3. उत्तर प्रदेश
4. मध्य प्रदेश।

सही जोड़ी मिलाइए

'अ'	'ब'
1. मक्का	(क) पश्चिम बंगाल
2. चाय	(2011) (ख) उत्तर प्रदेश
3. कपास	(2011) (ग) आन्ध्र प्रदेश
4. चावल	(घ) महाराष्ट्र
5. तम्बाकू	(ङ) असम

उत्तर:

1. → (ख)
2. → (ङ)
3. → (घ)
4. → (क)
5. → (ग)।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

खाद्यान्न फसलों से क्या तात्पर्य है ? खरीफ व रबी की फसल में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

रबी और खरीफ की फसलों में कोई तीन अन्तर स्पष्ट कीजिए। (2018)

उत्तर:

खाद्यान्न फसलें-खाद्यान्न फसलों से हमारा आशय उन फसलों से है जो भोजन के लिए मुख्य पदार्थ का कार्य करती हैं। खाद्यान्न फसलों में अनाज व दालें सम्मिलित हैं;

जैसे – चावल, गेहूँ, ज्वार, मक्का, बाजरा, चना, अरहर (तुअर) व अन्य दालें।

खरीब व रबी की फसल में अन्तर –

खरीफ

1. यह ऋतु मानसून के आगमन के साथ ही शुरू होती है।
2. इसकी प्रमुख फसलें चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का, कपास, पटसन और मूंगफली आदि हैं।
3. इन फसलों के पकने में कम समय लगता है।
4. इन फसलों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम होता है।
5. ये फसलें सितम्बर-अक्टूबर में काटी जाती हैं।

रबी

1. यह फसल मानसून ऋतु के बाद शरद ऋतु के साथ शुरू होती है।
2. इसकी मुख्य फसलें गेहूँ, जौ, चना, सरसों और अलसी जैसे तेल निकालने के बीज आदि हैं।
3. इन फसलों के पकने में अपेक्षाकृत अधिक समय लगता है।
4. इन फसलों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन अधिक होता है।
5. ये फसलें मार्च-अप्रैल में काटी जाती हैं।

प्रश्न 2.

हरित क्रान्ति से आप क्या समझते हैं ? (2018)

उत्तर:

हरित क्रान्ति-हरित क्रान्ति का आशय कृषि उत्पादन में उस तीव्र वृद्धि से है, जो अधिक उपज देने वाले (High Yielding Variety) बीजों, रासायनिक उर्वरकों व नई तकनीक के प्रयोग के परिणामस्वरूप हुई है। इस क्रान्ति के फलस्वरूप फसलों की उत्पादकता में काफी वृद्धि हुई है। भारतीय कृषि में उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु और आन्ध्र प्रदेश में गेहूँ व चावल का अधिक उत्पादन उन्नत किस्म के बीजों की देन है।

प्रश्न 3.

श्वेत क्रान्ति व पीत क्रान्ति में अन्तर स्पष्ट कीजिए। (2018)

उत्तर:

श्वेत क्रान्ति व पीत क्रान्ति में अन्तर

श्वेत क्रान्ति

1. श्वेत क्रान्ति का पशुपालन से निकट का सम्बन्ध है।
2. इसे पीली क्रान्ति के नाम से जाना जाता है।
3. श्वेत क्रान्ति का अर्थ है डेरी विकास कार्यक्रमों के द्वारा दूध के उत्पादन में वृद्धि।
4. सरकार द्वारा इस क्रान्ति के अन्तर्गत विदेशी नस्लों की गायों तथा स्थानीय गायों के संकरण से नई जातियों का विकास किया है जो अधिक दूध देती हैं।

पीत क्रान्ति

1. पीली क्रान्ति का सम्बन्ध खाद्य तेलों और तिलहन फसलों से है।
2. इसे ऑपरेशन फ्लड के नाम से जाना जाता है।

3. खाद्य तेलों और तिलहन फसलों के उत्पादन के क्षेत्र में अनुसन्धान और विकास करने की रणनीति को पीली क्रान्ति कहते हैं।
4. 1987-88 में भारत सरकार ने टेक्नोलॉजी मिशन की शुरुआत की, साथ ही सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य में पर्याप्त वृद्धि की है और किसानों को अच्छे बीज उपलब्ध कराकर देश की तिलहन उत्पादकता बढ़ाने का प्रयास किया है।

प्रश्न 4.

औषधीय उद्यान विधि के प्रमुख घटक कौन-कौनसे हैं ?

अथवा

औषधीय उद्यान विधि के अन्तर्गत कौन-कौनसी फसलों का उत्पादन सम्भव है ? लिखिए। (2009)

उत्तर:

औषधीय उद्यान विधि के घटक निम्नलिखित हैं –

1. फल – भारत में उष्ण कटिबन्धीय फलों के अन्तर्गत आम, केला, नीबू, अनन्नास, पपीता, अमरूद, चीकू, लीची, अंगूर तथा शीतोष्ण कटिबन्धीय फलों में सेब, आड़ू, नाशपाती, खूबानी, बादाम, अखरोट और शुष्क क्षेत्र के फलों में आँवला, बेर, अनार, अंजीर का उत्पादन होता है।
2. सब्जियाँ – सब्जियों की पैदावार में चीन के बाद दूसरा स्थान भारत का है। भारत में उगाई जाने वाली प्रमुख सब्जियाँ टमाटर, प्याज, बैंगनी, पत्तागोभी, फूल गोभी, मटर, आलू, खीरा हैं।
3. फूल – गुलाब, ग्लैडियोला, ट्यूबरोज, कोसादा प्रमुख फूल हैं। इनकी खेती भारत में परम्परागत ढंग से हो रही है।
4. मसाले – भारत मसालों का घर कहा जाता है। यहाँ काली मिर्च, इलायची, अदरक, लहसुन, हल्दी, मिर्च के साथ-साथ बीज वाले मसालों का भी उत्पादन होता है।
5. औषधीय व सुगन्धित पौधे – लगभग 2000 देशीय प्रजातियों को औषधि के रूप में एवं 1,300 प्रजातियों को सुगन्धित एवं महक देने वाले पौधों के रूप में चिन्हित किया गया है।

प्रश्न 5.

उद्यानिकी विकास कार्यक्रम के प्रमुख प्रावधान बताइए। (2017)

उत्तर:

उद्यानिकी विकास कार्यक्रम के प्रमुख प्रावधान निम्नवत् हैं –

1. कलम बैंक स्थापित करने सहित पर्याप्त गुणवत्ता वाले पौधों का उत्पादन और पूर्ति की क्षमता बढ़ाना।
2. बागवानी फसलों के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि करना।
3. मिट्टी एवं पत्तियों के परीक्षण हेतु प्रयोगशालाएँ, पौधशालाएँ, पाली हाउस, ग्रीन हाउस की सुविधाएँ बढ़ाना।
4. निर्यात के लिए उच्च किस्म की बागवानी फसलों का उत्पादन बढ़ाना।
5. विपणन एवं निर्यात के लिए मूलभूत सुविधाओं में वृद्धि करना।

प्रश्न 6.

खनिज पदार्थ का क्या महत्त्व है ? (2017)

उत्तर:

धरातल के नीचे बहुत गहराई तक खोदकर बहुत-से पदार्थ निकाले जाते हैं जिन्हें खनिज पदार्थ कहते हैं।

खनिज के महत्त्व –

1. औद्योगिक विकास का आधार खनिज है।

2. यातायात के सभी साधन, मशीनें, उपकरण, कृषि, यन्त्र, पेट्रोलियम से बने पदार्थ, सोना, चाँदी व हीरे से बने आभूषण आदि हमें खनिजों से ही प्राप्त होते हैं।
3. लोहा और कोयला दो ऐसे खनिज हैं, जिनके बिना औद्योगिक प्रगति सम्भव नहीं है।
4. खनिजों का शक्ति के साधनों में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनका विकास किये बिना कोई भी देश या क्षेत्र आर्थिक और औद्योगिक प्रगति नहीं कर सकता। इससे स्पष्ट है कि खनिजों का मानव के लिए अत्यधिक महत्त्व है।
5. दैनिक जीवन में काम आने वाली प्रत्येक वस्तु का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से खनिजों से सम्बन्ध जुड़ा है।

प्रश्न 7.

धातु के आधार पर खनिज पदार्थों के कौन-कौनसे प्रकार हैं?

उत्तर:

धात्विक खनिज – वे खनिज पदार्थ, जिनमें धातु पर्याप्त मात्रा में मिलती है। लोहा, मैंगनीज, क्रोमाइट, टंगस्टन, बेरिल आदि लौह वस्तुएँ हैं। अलौह धातुएँ ताँबा, सोना, चाँदी, सीसा, टिन, जस्ता एवं बॉक्साइट आदि हैं।

प्रश्न 8.

आधुनिक युग में लोहे का क्या महत्त्व है ?

उत्तर:

भू-गर्भ से प्राप्त होने वाले खनिजों में लौह अयस्क सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण खनिज है। यह धरातल में सुलभ और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध खनिज है। मानव के विकास में लोहे का महत्त्वपूर्ण योगदान है। यह केवल औद्योगिक ढाँचे की रीढ़ ही नहीं, बल्कि आधुनिक युग के प्रत्येक क्षेत्र की आधारशिला है।

वर्तमान में मनुष्य के उपयोग में आने वाली छोटी-छोटी वस्तुएँ; जैसे सुई, ब्लेड, आलपिन, चाकू आदि से लेकर विशाल मशीनें, ट्रैक्टर, मोटर, वायुयान, रेल, अस्त्र-शस्त्र आदि सभी वस्तुओं का निर्माण लोहे से होता है। लोहे का प्रयोग भवन बनाने, कारखानों का निर्माण करने, वस्त्र बनाने आदि अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किया जाता है। मानव जीवन की प्रत्येक आवश्यकता को पूरा करने और जीवन को सुखमय बनाने में लौह अयस्क का महत्त्वपूर्ण योगदान है। यदि लोहे का अभाव होता तो आज आर्थिक प्रगति एवं औद्योगिक विकास बिल्कुल सम्भव नहीं होता। अतः वर्तमान युग में लौह-अयस्क विकास के जन्मदाता हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के योगदान को स्पष्ट कीजिए। (2009, 13, 15)

उत्तर:

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान

कृषि हमारा प्राथमिक व्यवसाय है। इसमें फसलों की खेती तथा पशुपालन दोनों ही सम्मिलित हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान निम्न तथ्यों से स्पष्ट है –

(1) जनसंख्या का भरण-पोषण-भारतीय कृषि से विश्व की लगभग 17 प्रतिशत जनसंख्या का पोषण हो रहा है। कृषि हमारी दो-तिहाई जनसंख्या का भरण-पोषण करती है।

(2) रोजगार में योगदान-भारतीय कृषि में देश की लगभग दो-तिहाई श्रमशक्ति लगी हुई है। इसके द्वारा अप्रत्यक्ष रूप में भी अनेक लोगों को रोजगार मिला है। लोग या तो दस्तकारी में लगे हैं या गाँवों में कृषि उत्पादों पर आधारित छोटे-मोटे उद्योग-धन्धों में लगे हैं। साथ ही कृषि में बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार देने की सम्भावनाएँ

छिपी हैं।

(3) उद्योग-धन्धों का आधार-कृषि हमारे देश के अनेक छोटे-बड़े तथा कुटीर उद्योगों का प्रमुख आधार है, क्योंकि इन उद्योगों के लिए कच्चा माल कृषि से ही प्राप्त होता है; जैसे-कपड़ा उद्योग के लिए कपास, जूट उद्योग के लिए जूट (पटसन), चीनी उद्योग के लिए गन्ना तथा अन्य अनेक उद्योगों के लिए तिलहन इत्यादि कृषि से ही प्राप्त होते हैं। इस प्रकार देश का औद्योगिक विकास बहुत कुछ कृषि पर ही आधारित है।

(4) निर्यात व्यापार में महत्त्व-भारत के विदेशी व्यापार में भी कृषि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। चाय, तिलहन, तम्बाकू, मसाले, कहवा, रुई, जूट, आलू, गुड़, प्याज, सूती वस्त्र, चीनी आदि अनेक वस्तुएँ जिनका भारत विदेशों को निर्यात करता है, कृषि से ही प्राप्त होती हैं। इनके निर्यात से हमें दुर्लभ विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। देश के कुल निर्यात का लगभग 13.4% भाग कृषि से सम्बन्धित वस्तुओं का ही होता है।

(5) खाद्य सामग्री की उपलब्धि-कृषि में लगभग 62.5% करोड़ लोगों को खाद्य सामग्री; जैसे गेहूँ, चावल, जौ, चना, दालें, मक्का, ज्वार, बाजरा, फल, मेवा एवं शाक-सब्जियाँ, तिलहन तथा विविध प्रकार के मसाले प्राप्त होते हैं।

खाद्य पदार्थों की प्राप्ति एवं पूर्ति के सम्बन्ध में महात्मा गांधी का कथन है, “जीवन-कृषि पर निर्भर करता है। जहाँ, कृषि लाभदायक नहीं है वहाँ स्वयं जीवन भी लाभदायक नहीं हो सकता है।”

संक्षेप में, भारतीय कृषि देश की अर्थव्यवस्था की महत्त्वपूर्ण आधारशिला है। इसकी सफलता या विफलता का प्रभाव देश की खाद्य समस्या, सरकारी आय, आन्तरिक व विदेशी व्यापार, यातायात के साधनों तथा राष्ट्रीय आय पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। इसलिए कहा जाता है मानव जीवन में जो महत्त्व आत्मा का है वही भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का है।

प्रश्न 2.

भारत की प्रमुख कृषि उपजों का वर्णन करते हुए कृषि विकास हेतु किए गए सरकारी प्रयासों का वर्णन कीजिए।
अथवा

श्वेत क्रान्ति क्या है ? (2016)

संकेत-श्वेत क्रान्ति शीर्षक देखें।

उत्तर:

भारत की प्रमुख कृषि उपजें

1. खरीफ की फसलें-वे फसलें जो वर्षा के आरम्भ (जून, जुलाई) में बोयी जाती हैं एवं दशहरे के बाद शरद ऋतु के अन्त (अक्टूबर, नवम्बर) तक तैयार हो जाती हैं, खरीफ की फसलें कहलाती हैं। मानसून के आगमन पर बोई जाने वाली प्रमुख खरीफ फसलें चावल, ज्वार, मक्का, सोयाबीन, गन्ना, कपास, पटसन, तिली, मूंगफली आदि हैं।
2. रबी की फसलें-जो फसलें शरद ऋतु के आगमन पर दशहरे के पश्चात् अक्टूबर, नवम्बर में बोई जाती हैं और ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में मार्च, अप्रैल में तैयार हो जाती हैं, रबी की फसलें कहलाती हैं। गेहूँ, चना, जौ, सरसों, तम्बाकू आदि रबी की फसलें हैं।
3. जायद फसलें-विशेषतः ग्रीष्म ऋतु में पैदा की जाने वाली सब्जियाँ और हरे चारे की फसलें जायद की फसलें कहलाती हैं।
4. खाद्यान्न फसलें- लघु उत्तरीय प्रश्न 1 का उत्तर देखें।
5. नकद व व्यापारिक फसलें- अन्य परीक्षोपयोगी प्रश्न का अति लघु उत्तरीय प्रश्न 5 का उत्तर देखें।

कृषि विकास हेतु सरकारी प्रयास

(1) हरित क्रान्ति- लघु उत्तरीय प्रश्न 2 का उत्तर देखें।

(2) श्वेत क्रान्ति-श्वेत क्रान्ति का अर्थ है डेरी विकास कार्यक्रमों के द्वारा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों में दूध का उत्पादन बढ़ाने पर विशेष बल दिया गया है। सरकार द्वारा विदेशी नस्लों की गायों तथा स्थानीय गायों के संकरण से नई जातियों का विकास किया है जो अधिक दूध देती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सहकारी समितियों का गठन कर गाँवों में दुग्ध उत्पादकों के दूध को एकत्रित करके उसे बेचने का प्रबन्ध करती हैं। ये समितियाँ ऋण देती हैं तथा पशुओं की चिकित्सा की व्यवस्था भी करती हैं। यह आन्दोलन गुजरात के खेड़ा जिले से प्रारम्भ होकर बड़ी तेजी से महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश में पहुँच गया। 1999-2000 में देश में कुल दुग्ध उत्पादन 781 लाख टन था जो बढ़कर 2015-16 में लगभग 1,555 लाख टन हो गया।

(3) पीत क्रान्ति-खाद्य तेलों और तिलहन फसलों के उत्पादन के क्षेत्र में अनुसन्धान और विकास करने की रणनीति को पीली क्रान्ति (Yellow Revolution) कहते हैं। साठ के दशक तक भारत तिलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर था, किन्तु कुल भूमि में तिलहन फसलों के घटते क्षेत्रफल, खाद व उर्वरकों के नगण्य उपयोग, सिंचाई के सीमित साधन, बढ़ती आबादी और फसल सुरक्षा एवं वैज्ञानिक तरीकों के उपयोग न करने से देश में खाद्य तेलों की कमी हो गई है। तिलहन उत्पादन बढ़ाने के लिए अनेक प्रयास किये गये; जैसे-1987-88 में भारत सरकार ने एक टेक्नोलॉजी मिशन की शुरुआत की जिसके द्वारा राष्ट्रीय, राज्य व स्थानीय स्तर पर गठित सरकारी समितियों, कृषि अनुसन्धान संस्थाओं एवं ऋण प्रदान करने वाली संस्थाओं की मदद से तिलहन उत्पादन को अधिक लाभप्रद बनाने के उपाय किए। सरकार ने तिलहन के समर्थन मूल्य, भण्डारण और वितरण की सुविधाओं में वृद्धि की।

गुलाबी क्रान्ति – अन्य परीक्षोपयोगी प्रश्न का अति लघु उत्तरीय प्रश्न 2 का उत्तर देखें।

नीली क्रान्ति – देश में मछली उत्पादन में हुई प्रगति को नीली क्रान्ति (Blue Revolution) कहते हैं। भारत विश्व में कुल मछली उत्पादन में तीसरा बड़ा राष्ट्र है। देश में मछली उत्पादन को बढ़ाने के लिए विश्व बैंक की सहायता से एक परियोजना 5 राज्यों में लागू की गई है। मछली उत्पादन से भोजन की आपूर्ति बढ़ती है, रोजगार के अवसर बढ़ते हैं तथा विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। वर्ष 2015-16 में देश में 107.95 लाख टन मछली की उत्पादन हुआ।

प्रश्न 3.

भारत में लोहा या मैंगनीज उत्पादक क्षेत्रों के वितरण का वर्णन कीजिए।

अथवा

भारत में लोहा उत्पादक क्षेत्रों के वितरण का वर्णन कीजिए। (2014)

उत्तर:

लोहा अयस्क आधुनिक औद्योगिक सभ्यता का आधार लोहा है। विश्व के लोहा उत्पादन राष्ट्रों में भारत का आठवाँ स्थान है परन्तु उत्कृष्ट लोहे की प्राप्ति में भारत का दूसरा स्थान है।

लोहा चार प्रकार का होता है-हेमेटाइट (Haematite), मैग्नेटाइट (Magnetite), लिमोनाइट (Limonite) तथा सिडेराइट (Siderite)।

भारत में लोहा उत्पादक क्षेत्रों का वितरण निम्न प्रकार है –

1. उत्तरी पूर्वी क्षेत्र-झारखण्ड राज्य के सिंहभूमि की प्रसिद्ध लोहा खदानें मनोहरपुर, पाशिराबरु, बुढ़ाबुरु, गुआ और नोआमुण्डो हैं। उड़ीसा के मयूरभंज जिले में गुरूमहिसानी, सलाइपट तथा बादाम पहाड़ की खदानें प्रमुख हैं।

2. मध्य भारत क्षेत्र-इस क्षेत्र में गोवा, मध्य प्रदेश में जबलपुर, मण्डला, बालाघाट, छत्तीसगढ़ का दुर्ग, रायगढ़, बिलासपुर और महाराष्ट्र के चाँदा और रत्नागिरि जिलों में लौह भण्डार हैं। दुर्ग जिले में डल्ली व राजहरा और बस्तर की बैलाडिला एवं राउघाट की खदानें प्रसिद्ध हैं। राजस्थान के अरावली क्षेत्र, उदयपुर व भीलवाड़ा, झुंजारपुर व बूंदी जिलों में भी लौह खदानें हैं।
3. प्रायद्वीपीय क्षेत्र-कर्नाटक के चिकमंगलूर, बेल्लारि, उत्तरी कन्नड तथा चित्रदुर्ग जिलों में, तमिलनाडु के सलेम, तिरुचिरापल्ली तथा दक्षिणी अर्काड जिलों में तथा आन्ध्र प्रदेश के अनन्तपुर, कुर्नूल तथा नेल्लूर जिलों में लोहे की खदानें हैं।
4. अन्य क्षेत्र-हरियाणा के महेन्द्रगढ़, हिमाचल प्रदेश के मण्डी में, उत्तराखण्ड के गढ़वाल, अल्मोड़ा तथा नैनीताल, केरल के कोझिकोड, जम्मू व कश्मीर के जम्मू व ऊधमपुर जिलों तथा नागालैण्ड में लोहे के भण्डार हैं।

मैंगनीज अयस्क

भारत मैंगनीज के उत्पादन में बहुत धनी है तथा यहाँ उत्तम कोटि का मैंगनीज निकाला जाता है। मैंगनीज उत्पादन में भारत का विश्व में द्वितीय स्थान है। विश्व के कुल उत्पादन का 19 प्रतिशत मैंगनीज यहाँ निकाला जाता है। जिस धातु में मैंगनीज व लोहा दोनों अधिक मात्रा में मिश्रित रहते हैं, उसे मैंगनीज लौह अयस्क कहते हैं। 5 प्रतिशत से कम मैंगनीज के अंश होने पर लौह अयस्क कहलाता है।

भारत में मैंगनीज उत्पादन क्षेत्रों का वितरण निम्न प्रकार है –

1. मध्य भारतीय खदानें-इस क्षेत्र में भारत का 50 प्रतिशत मैंगनीज का उत्पादन होता है। मुख्य खदानें महाराष्ट्र के भण्डारा, रत्नागिरि व नागपुर, मध्य प्रदेश के बालाघाट, छिन्दवाड़ा, सिवनी, मण्डला, धार, झाबुआ, छत्तीसगढ़ के बस्तर, गुजरात के खेड़ा व पंचमहल और राजस्थान के उदयपुर एवं बाँसवाड़ा में स्थित है।
2. प्रायद्वीपीय खदानें-कर्नाटक के उत्तरी कन्नड़, चित्रदुर्ग, चिकमंगलूर, शिमोगा, बेल्लारि तथा तुमकुर जिलों में मैंगनीज अयस्क की खदानें हैं। आन्ध्र प्रदेश में विशाखापट्टनम, कड़प्पा तथा श्रीकाकुलम में मैंगनीज मिलता है।
3. उत्तरी-पूर्वी खदानें-झारखण्ड में सिंहभूमि और उड़ीसा के क्योँझर, गंजाम, सुन्दरगढ़ तथा बेलागिरि जिलों में मैंगनीज मिलता है।

प्रश्न 4.

जड़ी-बूटियों के औषधीय उपयोग का वर्णन कीजिए।

उत्तर

जड़ी-बूटियों के औषधीय उपयोग

औषधीय पौधे एवं जड़ी-बूटियों को मानव के लिए प्रकृति प्रदत्त अमूल्य उपहार कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्रमुख औषधीय पौधे एवं उनका उपयोग निम्नानुसार है –

1. अश्वगन्धा-आयुर्वेद में इसे गठिया के दर्द, जोड़ों की सूजन, पक्षाघात तथा रक्तचाप आदि रोगों के उपचार में इस्तेमाल करने की बात कही है। इसकी पत्तियों का उपयोग नेत्र व क्षय रोग के उपचार में किया जाता है।
2. गिलोय-इसका तना सर्वाधिक उपयोगी होता है। इसके फल का उपयोग पीलिया व गठिया रोग के उपचार में तथा सूखे पाउडर को शहद के साथ मिलाकर बलवर्धक टॉनिक के रूप में एवं ज्वर में इसके तनों को छीलकर उसका रस निकालकर देना उपयोगी है।

3. शतावरी-इसकी जड़ों से प्राप्त बलवर्धक टॉनिक मानसिक तनाव से मुक्ति, एनीमिया के उपचार, सूखी खाँसी, विष निरोधक, पुराने फोड़े-फुसी के उपचार में उपयोगी है।
4. सर्पगंधा-इसकी जड़ों का उपयोग उच्च रक्तचाप में, श्वास रोग में, अनिद्रा, हिस्टीरिया, हैजा, पुराना बुखार आदि रोगों के उपचार में किया जाता है। इसके पत्तों का रस मोतियाबिन्द की सफेदी के उपचार में किया जाता है।
5. ग्वारपाठा-इसे घृतकुमारी या ऐलोवेरा के नाम से भी जाना जाता है। शहद के साथ इसके पत्तों का रस लेने से खाँसी व कफ में आराम, पत्तों का ताजा गूदा लेने से गठिया, कटिवात व जोड़ों के दर्द में उपयोगी होता है। यह रुधिर विकार तथा त्वचारोग नाशक है।
6. तुलसी-यह भारतवर्ष का एक सर्वरोग नाशक पौधा है जो अपने अनेक गुणों के कारण उपयोगी है। अस्थमा, खाँसी व सर्दी में तुलसी पत्तों को हल्दी व शहद के साथ काढ़ा बनाकर सेवन करने से फायदा होता है। बच्चों की सामान्य बीमारियों में भी तुलसी के पत्तों का रस लाभदायक होता है।

प्रश्न 5.

छोटा नागपुर के पठार को विश्व का खनिज आश्चर्य क्यों कहते हैं ? समझाइए। (2010)

उत्तर:

छोटा नागपुर का पठार खनिज पदार्थों की दृष्टि से इतना अधिक धनी है कि उसे 'विश्व का खनिज आश्चर्य' कहा जाता है। भारत का लगभग 40 प्रतिशत खनिज पदार्थ यहीं पाया जाता है। यह क्षेत्र बिहार राज्य के दक्षिणी भाग (यह भाग वर्तमान में झारखण्ड राज्य के अन्तर्गत आता है।) उड़ीसा और पश्चिम बंगाल तक फैला हुआ है जो भारत के लगभग मध्य भाग में है।

छोटा नागपुर का सम्पूर्ण पठार प्राचीन कठोर शिलाओं का होने से यह अनेक प्रकार के धात्विक खनिजों का भण्डार है। बिहार और उड़ीसा में लौह-अयस्क की खदानें हैं। इसके अलावा यहाँ मैंगनीज, बॉक्साइट, अभ्रक, ताँबा, क्रोमाइट तथा चूने का पत्थर आदि खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। इसीलिए छोटा नागपुर के पठार को भारत का 'खनिज हृदय प्रदेश' भी कहते हैं।

प्रश्न 6.

लोहे के उपयोग पर प्रकाश डालते हुए भारत में लोहा उत्पादक क्षेत्रों का वर्णन कीजिए। (2009)

उत्तर:

लोहे का उपयोग-लघु उत्तरीय प्रश्न 8 का उत्तर देखें।

लोहा उत्पादक क्षेत्र- दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 3 का उत्तर देखें।

प्रश्न 7.

अभ्रक का क्या उपयोग है ? भारत में अभ्रक कहाँ-कहाँ मिलता है ?

अथवा

अभ्रक के कोई दो उपयोग लिखिए। (2016)

उत्तर:

अभ्रक का उपयोग – यह पुरानी कायान्तरित शैलों में पाया जाता है। यह परतदार, हल्का तथा चमकीला होता है। यह गरमी तथा बिजली के लिये कुचालक होता है। बहुत-से उद्योगों में इसका उपयोग होता है; जैसे-औषधि बनाने में, बिजली के संचालन, टेलीफोन, रेडियो, वायुयान, मोटर परिवहन आदि उद्योग में। अभ्रक के उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। विश्व का 26 प्रतिशत अभ्रक भारत से प्राप्त होता है।

अभ्रक उत्पादक क्षेत्र – अभ्रक मुख्यतया बिहार, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान व कर्नाटक राज्यों से प्राप्त होता है। भारत का 60 प्रतिशत अभ्रक बिहार और झारखण्ड से प्राप्त होता है। गया, मुंगेर व हजारीबाग जिलों में अभ्रक की खदानें हैं। बिहार का अभ्रक स्वच्छता एवं सफेदी के लिए विश्व प्रसिद्ध है इसीलिए बिहार के अभ्रक को 'रूबी अभ्रक' (Ruby Mica) कहते हैं। तमिलनाडु में अभ्रक नीलगिरि, मदुराई, कोयम्बटूर तथा सलेम जिलों में पाया जाता है। आन्ध्र प्रदेश के नेल्लूर, गुण्टूर, विशाखापट्टनम तथा पश्चिमी गोदावरी जिलों में अभ्रक पाया जाता है। यहाँ का अभ्रक हरे रंग का होता है और शीघ्र पहचान में आ जाता है। राजस्थान के भीलवाड़ा, जयपुर, उदयपुर, टोंक, सीकर तथा अजमेर में अभ्रक मिलता है। मध्य प्रदेश के ग्वालियर, छत्तीसगढ़ के बस्तर, कर्नाटक के हासन तथा केरल के पुन्नालूर जिले में अभ्रक पाया जाता है। इसके अलावा हरियाणा के नारलौल (महेन्द्रगढ़) व गुड़गाँव तथा हिमाचल प्रदेश के किन्नोर जिलों में भी अभ्रक मिलता है।